यः=जो; **इमम्**=इस; **परमम्**=परम; **गुह्यम्**=गोपनीय (रहस्यमय) गीताशास्त्र को; **मत्**=मेरे; **भक्तेषु**=भक्तों में; **अभिधास्यति**=कहेगा; **भक्तिम्**=भक्ति; **मयि**=मुझ में; **पराम्**=दिव्य; **कृत्वा**=करके; **माम्**=मुझ को; **एव**=ही; **एष्यति**=प्राप्त होगा; **असंशयः**=निःसन्देह।

अनुवाद

जो इस गीतारूपी परम रहस्य को भक्तों में कहेगा, उसके लिए भक्तियोग की प्राप्ति निश्चित है और अन्त में वह मेरे पास लौट आयगा।।६८।।

तात्पर्य

सामान्यतः यह परामर्श है कि भगवद्गीता की चर्चा भक्त-गोष्ठी में ही की जाय, क्योंकि जो भक्त नहीं हैं, वे न तो श्रीकष्ण के तत्त्व को जान सकते हैं और न भगवद्गीता को समझ सकते हैं। जो श्रीकष्ण को तत्त्व से और भगवद्गीता को यथार्थ रूप में नहीं मानते, वे स्वेच्छापूर्वक गीता के अर्थ का अनर्थ करके अपराधी न बनें। भगवद्गीता का पात्र वही है, जो श्रीकृष्ण को भगवान् स्वीकार करता हो। यह केवल भक्तों की विषयवस्तु है, मनोधर्म करने वालों का तो इसमें प्रवेश भी नहीं है। फिर भी, जो कोई भगवद्गीता को उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का निश्छल प्रयास करता है, वह भक्तियोग की क्रियाओं में उन्नति करता हुआ शुद्धभक्तियोग की अवस्था को प्राप्त हो जायगा। इस शुद्ध भक्तियोग के प्रताप से उसके लिए अपने घर—भगवान् के पास वापस लौटना निश्चित है।

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।।६९।।

न च=और न ही; **तस्मात्**=उससे; **मनुष्येषु**=मनुष्यों में; **कश्चित्**=कोई भी; **मे**=मेरा; **प्रियकृत्तमः**=अधिक प्रिय; **भविता**=होगा; **न च**=और न ही; **मे**=मेरा; **तस्मात्**=उससे; **अन्यः**=दूसरा; **प्रियतरः**=अधिक प्रिय; **भुवि**=संसार में।

अनुवाद

उससे अधिक मेरा प्रिय सेवक न तो इस संसार में कोई है और न ही कभी उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई होगा।।६९।।

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः।।७०।।

अध्येष्यते=नित्य पाठ करेगा; **च**=और; **यः**=जो; **इमम्**=इस; **धर्म्यम्**=पावन; **संवादम्**=संवादरूप गीताशास्त्र का; **आवयोः**=हमारे; **ज्ञानयज्ञेन**=ज्ञान यज्ञ से; **तेन**=उसके द्वारा; **अहम्**=मैं; **इष्टः**=पूजित; **स्याम्**=होऊँगा; **इति**=ऐसा; **मे**=मेरा; **मतिः**=मत है।

अनुवाद

और मेरी घोषणा है कि जो कोई हमारे इस पावन संवादरूप गीताशास्त्र का पाठ करेगा, उसके द्वारा मैं ज्ञानयज्ञ से पूजित होऊँगा।।७०।।